सनन्ध इमाम के स्वाल जवाब की

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत।। १ ।।

हे मोमिनो! उस वाणी को सुनो जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा और न इसकी खबर (पहचान) किसी को हुई। उसकी हकीकत मैं तुमको बताती हूं जिससे तुम्हारे संशय मिट जाएंगे।

हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर।
कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर।। २ ।।

अब श्री राजजी महाराज का इमाम मेंहदी को हुक्म हुआ जिससे ज्ञान का अंकुर हम में फूटा (मूल घर का सम्बन्ध जागृत हुआ), इसलिए यह वाणी कलश के समान बेहद पार अक्षर और अक्षरातीत की पहचान कराती है।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन।
सो तो अब जाहेर हुई, जो मेंहेदी महंमद थें उतपन।। ३ ।।

अभी तक संसार के सब ग्रन्थों की कहानियां सुनीं, परन्तु हमारे घर का अकथनीय ज्ञान जिसका आज तक किसी को पता नहीं था, वह अब मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से सबमें जाहिर हुआ।

मुझे मेहेर मेहेबूबे करी, अंदर परदा खोल।
सो सुख निसबतियनसों, कहूं सो दो एक बोल।। ४ ।।

धनी ने मेरे ऊपर कृपा की और हकीकत के सब भेद खोल दिए। उनमें से थोड़ा-सा अपने सुन्दरसाथ को कहकर सुखी करूंगी।

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।
कहे तूं दे पड़ उत्तर, जो मैं पूछत हों तुझ।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज मुझे श्यामजी के मन्दिर में मिले और दिल की गुझ (गुह्य) बातें बताईं और कहा कि जो मैं पूछता हूं, उसका उत्तर तुम दो।

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।। ६ ।।

तुम कौन हो? यहां क्यों आई हो? तुम्हारा घर कहां है? तुम्हारा धनी कौन है? मन में सोच समझकर बताओ।

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
बिध सारी याकी कहे, इन जिमी के प्रकार।। ७ ।।

तुम जागृत हो कि नींद में हो, विचार कर देखो। इस भवसागर की हकीकत का जो तुमने अनुभव किया है, वह मुझे बताओ।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।। ८ ।।

अब श्यामाजी उत्तर देती हैं, हे पिया! आपने मुझसे जो पूछा है मैं अपनी बुद्धि के माफिक उसकी हकीकत का बयान करूंगी।

Nijanand App

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।। ९ ।।

श्यामाजी कहती हैं, धनी! सुनो, आपने मुझसे इस संसार की हकीकत पूछी है। इसका वर्णन मैं कैसे करूं? यह सारा संसार छल के बल और क्षर बुद्धि के बल से भरा है।

मैं न पेहेचानों आपको, न सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।। १० ।।

मुझे न अपनी पहचान है, न ही अपने घर की ही पहचान है। आपकी भी पहचान नींद में ही है। इस तरह से मैं जागी हूं (यह मेरा जागना है)।

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड।
चौदे तबक चारों तरफों, प्रपंच खड़ा प्रचंड।। ११ ।।

यह संसार जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश से बना है। इसमें चौदह लोक हैं। इसके चारों तरफ फरेब (झूठ) का बोल-बाला है।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।। १२ ।।

यह ब्रह्माण्ड अद्धर में लटक रहा है। इसकी कई लोगों ने कई तरह से खोज की, परन्तु किसी को भी इस भेद का पता नहीं चला।

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र।
तिमर तेज रुत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र।। १३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में तरह-तरह के विचित्र खेल होते हैं। उनको कहां तक कहूं? इसमें अन्धेरा, फिर उजाला होता है, फिर ऋतु बदलती है, सूर्य, चन्द्रमा और तारे घूमते हैं।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास।। १४ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। जिसमें से केवल साढ़े तीन करोड़ योजन में ही (मृत्यु लोक) अन्धेरा और उजाला होता है।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर।
तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप न घर।। १५ ।।

यहां सूर्य की रोशनी को उजाला कहते हैं वैसे तो अन्धेरा ही है। इससे कुछ पहचान तो होती नहीं। इससे न अपनी पहचान होती है न अपने घर की।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर।। १६ ।।

जैसे ही सूर्य का उदय होता है, माया का चक्कर (अन्धेरा) चालू हो जाता है। जीव, पशु, पक्षी, आदमी सब माया के लिए ही घूमते रहते हैं।

Nijanand App

काल न देखे इन फेरे, याही तिमर के फंद।
ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध॥ १७ ॥

इस चक्कर में पड़ने के बाद मौत कब आनी है, कोई नहीं देखता। इस तरह से सब माया के फन्दे में फंसे हैं। सूर्य को देखते ही माया के फन्दे और बंध (जाल) चालू हो जाते हैं।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए।
ए पांचों आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए॥ १८ ॥

कहीं पर हवा, कहीं पर बादल, कहीं पर बिजली चमकती है और गर्जना होती है। कहीं पर इतना पानी बरसता है कि पानी समाता नहीं है। यह पांचों अपने स्वरूप दिखाकर गायब हो जाते हैं।

या बिध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस॥ १९ ॥

इस तरह से अनेक ब्रह्माण्डों में यही सब कुछ दिखाई देता है। चारों तरफ भवसागर की लहरें आती हैं और पूरा ही भवसागर इसी एक ही तरीके से चल रहा है।

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल।
कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल॥ २० ॥

यहां की धुन्ध काली रात्रि के समान है। यहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखता, उसमें दरवाजा कहां है, ताला कहां है, चाबी कहां है नहीं दिखता तथा निकला कैसे जाएगा, यह ढंग पता नहीं है।

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर॥ २१ ॥

यह तीनों लोक (पाताल, मृत्युलोक, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोक अन्धकार से घिरे है। मैंने अच्छी तरह से देखा, पर कहीं से भी निकलने का रास्ता नहीं है।

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल।
ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल॥ २२ ॥

यह इस तरह का घोर अन्धेरा है। यहां जरा-सी भी जगह रोशनी की नहीं है। कइयों ने बहुत जोर लगाया फिर भी किसी को कुछ पता नहीं चला।

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम॥ २३ ॥

अगर किसी ने दीपक की तरह ज्ञान लिया भी तो घोर अन्धेरे में अपनी ही पहचान नहीं हुई। जहां चौदह लोकों में अन्धेरा ही अन्धेरा छाया हो वहां दीपक का उजाला क्या करेगा?

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग।
छुटकायो छूटे नहीं, नहीं न देखन जोग॥ २४ ॥

इस संसार को देखते ही व्याधि (रोग) घेर लेते हैं और दु:खी करते हैं। यह छुड़ाने से भी नहीं छूटते हैं, इसलिए निश्चित ही देखने लायक नहीं है।

Nijanand App

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर।
गुन पख अंग इंद्रियों, कियो अंधेरीमें अंधेर।। २५ ।।

इस संसार की टेढ़ी, संकरी गलियां (रीति-रिवाज) हैं, जिनमें भटकना पड़ता है। यहां पर गुण, पक्ष तथा अंग की इन्द्रियां सब माया में ही मस्त हैं (लगी हैं)।

तत्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर।
प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर।। २६ ।।

यहां पांच तत्व हैं, यह सब मिट जाने वाले हैं। कोई भी स्थिर नहीं है। एक क्षण में ही चर-अचर ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाएगा।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार।
नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार।। २७ ।।

यह पांचों तत्व मोह से बने हैं। मोह तत्व का तो पार ही नहीं है। वेदों ने भी खूब खोजा, लेकिन 'नेति नेति' कहकर पीछे लौट आए। निराकार के आगे की सुध नहीं मिली।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार।। २८ ।।

यह पूरा ब्रह्माण्ड बिना मूल के खड़ा है और निश्चित ही नाशवान है। इसके आर-पार (उस पार) कोई नहीं जा सकता।

इत पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन।। २९ ।।

इस संसार में कई तरह के पन्थ, पैंडे (धर्म) चलते हैं। कई प्रकार के भेष व शास्त्र हैं। इनके बीच में अज्ञान ही अज्ञान का अन्धेरा है, कहते हैं कि ज्ञान है, परन्तु कोई निकल नहीं पाता।

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद।। ३० ।।

ज्ञान के साथ चतुराई भी ले रखी है, इसलिए दर्द कैसे पैदा हो? न उनको अपनी पहचान है न पिया का दर्द होने से उनका सब ज्ञान मिट्टी के समान हो जाता है।

दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले न काहू तान।। ३१ ।।

दर्दी को दर्द का पता होता है और ज्ञानी को ज्ञान का, इसलिए दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। इन दोनों की राय (विचार) मिलती नहीं है।

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान।। ३२ ।।

दर्दी दीवाना होकर मूर्ख के समान दिखता है। ज्ञानी चतुराई में शैतान के समान दिखाई पड़ते हैं, इसलिए दर्दी और ज्ञानी दोनों ही अलग-अलग हैं। इनके तन से इनकी पहचान नहीं होती।

Nijanand App

कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान।। ३३ ।।

कभी मूर्ख को दर्द आ सकता है, परन्तु शैतान को दर्द नहीं आ सकता, इसलिए दोनों के बीज और अंकुर जुदा-जुदा हैं और इनकी सदा से ही दुश्मनी है।

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर।
दरदें प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर।। ३४ ।।

ज्ञानी को चतुराई पसन्द है और दर्द से दुश्मनी है। दर्दी को प्रीतम के लिए पागलपन पसन्द है और चतुराई से दुश्मनी है।

इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर।। ३५ ।।

यहां पर संसार में कई बहादुरों (पण्डितों, विद्वानों) ने ज्ञान की उपाधियां लोहे के कवच के समान पहन रखी हैं। यह शब्दों से (डींगें तो बड़ी मारते हैं) अहंकार बहुत दिखलाते हैं पर पार के शब्दों को माया में घटाकर डूब जाते हैं।

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए।
कई उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोड़े ताए।। ३६ ।।

इस संसार में जैसे-जैसे खोजा जाए, वैसे-वैसे बन्धन पड़ते जाते हैं। कई लोग उपाय करते हैं (जप, तप, ध्यान, भक्ति, आदि) पर उनका अन्धेरा (मन का विकार) नहीं छूटता।

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद।
खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद।। ३७ ।।

यह खबर भी किसी को नहीं है कि यह संसार एक क्षण का है। यह समझते हैं कि यह सदा रहने वाला है। इस वाद-विवाद में पड़े हैं।

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानों याथें जासी फेर।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर।। ३८ ।।

खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, शंकर कहलाते हैं। सोचा था यह माया के बन्धन से मुक्त होंगे, परन्तु जब अच्छी तरह से देखा तो इनको भी अन्धेरे में पाया।

ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए।। ३९ ।।

यहां से दरवाजा खोलकर कोई पार नहीं जा सका। इस खेल के बड़े-बड़े ज्ञानी भी बेसुधी में बैठे दिखते हैं।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध।
या बिध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।। ४० ।।

हे श्री राजजी महाराज! जिसने यह बन्धन बांधे हैं, वही इनको खोल सकता है। यह हकीकत खेल के मालिकों (त्रिदेवों) की है तो औरों की क्या कहूं?

Nijanand App

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।।४१ ।।

आपके हुक्म से ही जागृत बुद्धि आएगी, तब यह मोह सागर छूटेगा। यहां आत्मा अन्धेरे में पड़ी हुई है। वह बिना जागृत बुद्धि के नहीं जाग सकती।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।।४२ ।।

हे धनी! आपने जो प्रश्न पूछा उसके उत्तर में मैंने ब्रह्माण्ड की हकीकत बताई है, अभी बहुत कुछ कहना है, वह भी सुनो।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ७७ ||

सनन्ध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर।।१ ।।

हे धनी! मैंने संसार का सब काम-धन्धा छोड़कर आपको तरह-तरह से खोजा। सखियों से (हरदासजी से भोजनगर में) पूछती फिरी कि कोई प्रीतम का ठिकाना बताए।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल।।२ ।।

मैं इसकी भी थोड़ी-सी बात बताती हूं। मैंने तुम्हारे लिए ही इस खेल में बहुत खोज की, परन्तु मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो आपकी पहचान कराए।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबनकी मत।
जोलों साहेब न पाइए, तोलों कीजे कासों हेत।।३ ।।

मैंने शास्त्रों, साधुओं तथा उनके धर्मों और उनकी गवाही वाले ग्रन्थों को देखा, परन्तु जब तक धनी की सुध न मिले तब तक किससे लगाव रखें।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।।४ ।।

इस संसार में छोटे या बड़े जिसने भी परमात्मा को खोजा, किसी को भी परमात्मा नहीं मिला। उनके संशय नहीं मिटे और माया भी नहीं छूटी।

ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।।५ ।।

यह बड़ा ही झूठा छल का खेल है। इसमें किसी की कहीं भी पहुंच नहीं है। यहां कोई नहीं बताता कि हमारा घर कहां है? प्रीतम कहां है? जमीन कौनसी है और हम कौन हैं?

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत।।६ ।।

यह सारा संसार छल का ही रूप है। छल की तो चाल ही उलटी होती है। उसमें सीधा ज्ञान लेकर माया को जीतकर कोई नहीं निकला।

Nijanand App